لَنَسۡفَعًۢا بِالنَّاصِيَةِ ﴿۱۵﴾ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ﴿۱۶﴾ فَلۡيَدۡعُ نَادِيَهٗ ﴿۱۷﴾

तो हम ज़रूर पेशानी के बाल पकड़ कर खींचेंगे[15] कैसी पेशानी झूटी ख़ताकार अब पुकारे अपनी मजलिस को[16]

سَنَدۡعُ الزَّبَانِيَةَ ﴿۱۸﴾ كَلَّا ؕ لَا تُطِعۡهُ وَاسۡجُدۡ وَاقۡتَرِبۡ ﴿۱۹﴾ السجدة

अभी हम सिपाहियों को बुलाते हैं[17] हां हां उस की न सुनो और सज्दा करो[18] और हम से क़रीब हो जाओ

ركوعها ١ ۹۷ سُوۡرَةُ الۡقَدۡرِ مَكِّيَّةٌ ٢٥ اٰياتها ٥

सूरए क़द्र मक्किय्या है, इस में पांच आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

اِنَّاۤ اَنۡزَلۡنٰهُ فِیۡ لَيۡلَةِ الۡقَدۡرِ ﴿۱﴾ وَمَاۤ اَدۡرٰىكَ مَا لَيۡلَةُ الۡقَدۡرِ ﴿۲﴾

बेशक हम ने इसे[2] शबे क़द्र में उतारा[3] और तुम ने क्या जाना क्या शबे क़द्र

لَيۡلَةُ الۡقَدۡرِ ۙ خَيۡرٌ مِّنۡ اَلۡفِ شَهۡرٍ ﴿۳﴾ تَنَزَّلُ الۡمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوۡحُ فِيۡهَا

शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर[4] इस में फ़िरिश्ते और जिब्रील उतरते हैं[5]

15 : और उस को जहन्नम में डालेंगे। 16 शाने नुज़ूल : जब अबू जहल ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को नमाज़ से मन्अ़ किया तो हुज़ूर ने उस को सख़्ती से झिड़क दिया, इस पर उस ने कहा कि आप मुझे झिड़क्ते हैं, ख़ुदा की क़सम मैं आप के मुक़ाबिल नौ जवान सुवारों और पैदलों से इस जंगल को भर दूंगा, आप जानते हैं कि मक्कए मुकर्रमा में मुझ से ज़ियादा बड़े जथ्थे और मजलिस वाला कोई नहीं है। 17 : या'नी अ़ज़ाब के फ़िरिश्तों को। ह़दीस शरीफ़ में है कि अगर वोह अपनी मजलिस को बुलाता तो फ़िरिश्ते उस को बिल ए'लान गिरिफ़्तार करते। 18 : या'नी नमाज़ पढ़ते रहो 1 : "सूरतुल क़द्र" मदनिय्या व बक़ौले मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, पांच आयतें, तीस कलिमे, एक सो बारह ह़र्फ़ हैं। 2 : या'नी क़ुरआने मजीद को लौहे मह़फ़ूज़ से आस्माने दुन्या की त़रफ़ यकबारगी 3 : शबे क़द्र शरफ़ो बरकत वाली रात है। इस को शबे क़द्र इस लिये कहते हैं कि इस शब में साल भर के अह़काम नाफ़िज़ किये जाते हैं और मलाएका को साल भर के वज़ाइफ़ व ख़िदमात पर मामूर किया जाता है। येह भी कहा गया है कि इस रात की शराफ़त व क़द्र के बाइस इस को शबे क़द्र कहते हैं और येह भी मन्क़ूल है कि चूंकि इस शब में आ'माले सालिह़ा मक़्बूल होते हैं और बारगाहे इलाही में उन की क़द्र की जाती है इस लिये इस को शबे क़द्र कहते हैं। अह़ादीस में इस शब की बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हुई हैं : बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि जिस ने इस रात में ईमान व इख़्लास के साथ शब बेदारी कर के इबादत की अल्लाह तआला उस के साल भर के गुनाह बख़्श देता है। आदमी को चाहिये कि इस शब में कसरत से इस्तिग़्फ़ार करे और रात इबादत में गुज़ारे। साल भर में शबे क़द्र एक मरतबा आती है और रिवायाते कसीरा से साबित है कि वोह रमज़ानुल मुबारक के अशरए अख़ीरा में होती है और अक्सर इस की भी ताक़ रातों में से किसी रात में। बा'ज़ उ़लमा के नज़्दीक रमज़ानुल मुबारक की सत्ताईसवीं रात शबे क़द्र होती है, येही ह़ज़रत इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है। इस रात के फ़ज़ाइले अ़ज़ीमा अगली आयतों में इर्शाद फ़रमाए जाते हैं : 4 : जो शबे क़द्र से ख़ाली हों, इस एक रात में नेक अ़मल करना हज़ार रातों के अ़मल से बेहतर है। ह़दीस शरीफ़ में है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उम्मे गुज़श्ता के एक शख़्स का ज़िक्र फ़रमाया जो तमाम रात इबादत करता था और तमाम दिन जिहाद में मसरूफ़ रहता था, इस त़रह उस ने हज़ार महीने गुज़ारे थे, मुसल्मानों को इस से तअ़ज्जुब हुवा तो अल्लाह तआला ने आप को शबे क़द्र अ़त़ा फ़रमाई और येह आयत नाज़िल की, कि शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है। (اخرجہ ابن جریر عن طریق مجاہد) येह अल्लाह तआला का अपने ह़बीब पर करम है कि आप के उम्मती शबे क़द्र की एक रात इबादत करें तो इन का सवाब पिछली उम्मत के हज़ार माह इबादत करने वालों से ज़ियादा हो। 5 : ज़मीन की त़रफ़, और जो बन्दा खड़ा या बैठा यादे इलाही में मश्ग़ूल होता है उस को सलाम करते हैं और उस के ह़क़ में दुआ़ व इस्तिग़्फ़ार करते हैं।

www.dawateislami.net

بِاِذۡنِ رَبِّهِمۡ ۚ مِنۡ كُلِّ اَمۡرٍ ۛ﴿۴﴾ سَلٰمٌ ۛ هِیَ حَتّٰى مَطۡلَعِ الۡفَجۡرِ ﴿۵﴾ ع

अपने रब के हुक्म से हर काम के लिये[6] वोह सलामती है सुब्ह़ चमक्ने तक[7]

رکوعها ١	٩٨ سُوۡرَةُ الۡبَيِّنَةِ مَدَنِيَّةٌ ١٠٠	اٰياتها ٨

सूरए बय्यिनह मदनिय्या है, इस में आठ आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

لَمۡ يَكُنِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا مِنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ وَالۡمُشۡرِكِيۡنَ مُنۡفَكِّيۡنَ

किताबी काफ़िर[2] और मुश्रिक[3] अपना दीन छोड़ने को न थे

حَتّٰى تَاۡتِيَهُمُ الۡبَيِّنَةُ ۙ﴿۱﴾ رَسُوۡلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتۡلُوۡا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۙ﴿۲﴾

जब तक उन के पास रोशन दलील न आए[4] वोह कौन वोह **अल्लाह** का रसूल[5] कि पाक सह़ीफ़े पढ़ता है[6]

فِيۡهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ؕ﴿۳﴾ وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡكِتٰبَ اِلَّا مِنۡۢ بَعۡدِ مَا

उन में सीधी बातें लिखी हैं[7] और फूट न पड़ी किताब वालों में मगर बा'द इस के कि वोह

جَآءَتۡهُمُ الۡبَيِّنَةُ ؕ﴿۴﴾ وَمَاۤ اُمِرُوۡۤا اِلَّا لِيَعۡبُدُوا اللّٰهَ مُخۡلِصِيۡنَ لَهُ

रोशन दलील[8] उन के पास तशरीफ़ लाए[9] और उन लोगों को तो[10] येही हुक्म हुवा कि **अल्लाह** की बन्दगी करें निरे उसी पर

الدِّيۡنَ ۙ حُنَفَآءَ وَيُقِيۡمُوا الصَّلٰوةَ وَيُؤۡتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِيۡنُ

अ़क़ीदा लाते[11] एक त़रफ़ के हो कर[12] और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात दें और येह सीधा

الۡقَيِّمَةِ ؕ﴿۵﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا مِنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ وَالۡمُشۡرِكِيۡنَ فِیۡ

दीन है बेशक जितने काफ़िर हैं किताबी और मुश्रिक सब जहन्नम की

6 : जो **अल्लाह** तआ़ला ने इस साल के लिये मुक़द्दर फ़रमाया। 7 : बलाओं और आफ़तों से। 1 : "सूरए लम यकुन" इस को "सूरए बय्यिनह" भी कहते हैं, जुम्हूर के नज़्दीक येह सूरत मदनिय्या है और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا की एक रिवायत येह है कि मक्किय्या है, इस सूरत में एक रुकूअ़, आठ आयतें, चोरानवे कलिमे, तीन सो निनानवे ह़र्फ़ हैं। 2 : यहूदो नसारा 3 : बुत परस्त 4 : या'नी सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم जल्वा अफ़रोज़ हों, क्यूं कि हुज़ूरे अक़्दस عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالتَّسۡلِیۡمَات की तशरीफ़ आवरी से पहले येह तमाम येही कहते थे कि हम अपना दीन छोड़ने वाले नहीं जब तक कि वोह "नबिय्ये मौऊ़द" तशरीफ़ फ़रमा न हों जिन का ज़िक्र तौरैत व इन्जील में है। 5 : या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم 6 : या'नी कुरआने मजीद 7 : ह़क़ व अ़द्ल की 8 : या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم 9 : मुराद येह है कि पहले से तो सब इस पर मुत्तफ़िक़ थे कि जब "नबिय्ये मौऊ़द" तशरीफ़ लाएं तो हम उन पर ईमान लाएंगे, लेकिन जब वोह नबिय्ये मुकर्रम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم जल्वा अफ़रोज़ हुए तो बा'ज़ तो आप पर ईमान लाए और बा'ज़ ने ह़सदन व इ़नादन कुफ़्र इख़्तियार किया। 10 : तौरैत व इन्जील में 11 : इख़्लास के साथ शिर्क व निफ़ाक़ से दूर रह कर 12 : या'नी तमाम दीनों को छोड़ कर

www.dawateislami.net